विधान में नहीं। कर्म का नियम है कि उच्चकुल में जन्म, सुन्दरता, शिक्षा अथवा धन की प्राप्ति पूर्वजन्म के पुण्य के कारण होती है। असुर समझता है कि ये सब वस्तुऐं अकस्मात् मिली हैं और इसमें उसकी अपनी सामर्थ्य ही कारण है। उसे भाँति भाँति के लोगों, रूप-रंग और शिक्षा के पीछे किसी ईश्वरीय व्यवस्था की अनुभूति नहीं होती। जो कोई भी ऐसे असुर के साथ स्पर्धा करता है, वह उसे अपना शत्रु समझता है। आज के जगत् में बहुत से ऐसे आसुरी मनुष्य हैं, जो परस्पर एक-दूसरे के शत्रु हैं। यह शत्रुता व्यक्तियों से बढ़ते-बढ़ते परिवारों, समाजों और अन्त में राष्ट्रों तक में हो जाती है। यही कारण है कि आज सारा संसार कलह, युद्ध और शत्रुता से परिपूर्ण हो रहा है।

आसुरी स्वभाव वाला समझता है कि वह अन्य सब के भाग को भोग सकता है। सामान्यतः वह अपने को ही परमेश्वर समझता है। आसुर-भाव का प्रचारक अपने अनुयायियों से कहता है, ''ईश्वर को बाहर कहाँ ढूँढ रहे हो? तुम स्वयं ईश्वर हो; जो चाहो, वही करो। ईश्वर में विश्वास मत करो। ईश्वर को फैंक डालो। ईश्वर मर गया है।'' ये आसुरी शिक्षा के कुछ उदाहरण हैं।

यह देखते हुए भी कि दूसरे उससे अधिक भी धनी और प्रभावशाली हैं, आसुरी मनुष्य समझता है कि उस के जैसा धनवान् और बलशाली कोई नहीं हो सकता। जहाँ तक स्वर्ग-प्राप्ति का सम्बन्ध है, वह यज्ञ करने में विश्वास नहीं रखता। असुर समझते हैं कि यज्ञ करने के स्थान पर वे ऐसा यन्त्र बना लेंगे जिससे किसी भी उच्च लोक को जाया जा सके। ऐसे असुरों का सबसे उत्तम प्रतीक रावण है। वह ऐसी सीढ़ी बनाना चाहता था, जिससे वेद-विहित् यज्ञ किए बिना उच्च लोकों को प्राप्त किया जा सके। आधुनिक युग में रावण की ही कोटि के आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य संयन्त्रीय व्यवस्था के द्वारा उच्च लोकों को जाने के लिए प्रयत्नशील हैं। ये सब भ्रम के चिन्ह हैं। इसका परिणाम यह है कि वे जाने-अनजाने अपवित्र नरकों में गिर रहे हैं। **मोहजाल** शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है। जाल में फँसी मछलियों के समान असुरों के लिए इस बन्धन से निकलने का कोई मार्ग नहीं है।

आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्।।१७।।

आत्मसम्भाविताः=अपने को ही श्रेष्ठ मानने वाले; **स्तब्धाः**=अशिष्ट; **धनमानमदान्विताः**=धन और मान के मद से अंधे हुए; **यजन्ते**=पूजन करते हैं; **नामयज्ञैः**=नाममात्र के यज्ञों द्वारा; **ते**=वे; **दम्भेन**=पाखण्ड से; **अविधिपूर्वकम्**=शास्त्र-विधि के बिना।

अनुवाद

वे अपने को ही श्रेष्ठ मानने वाले, अशिष्ट व्यवहार वाले, धन और मान के मद से अंधे असुर शास्त्रविधि के बिना नाममात्र के यज्ञ करते हैं।।१७।।